उपकार

मूल्य ३०

asha parekh • manoj kumar • kamini kaushal & pran

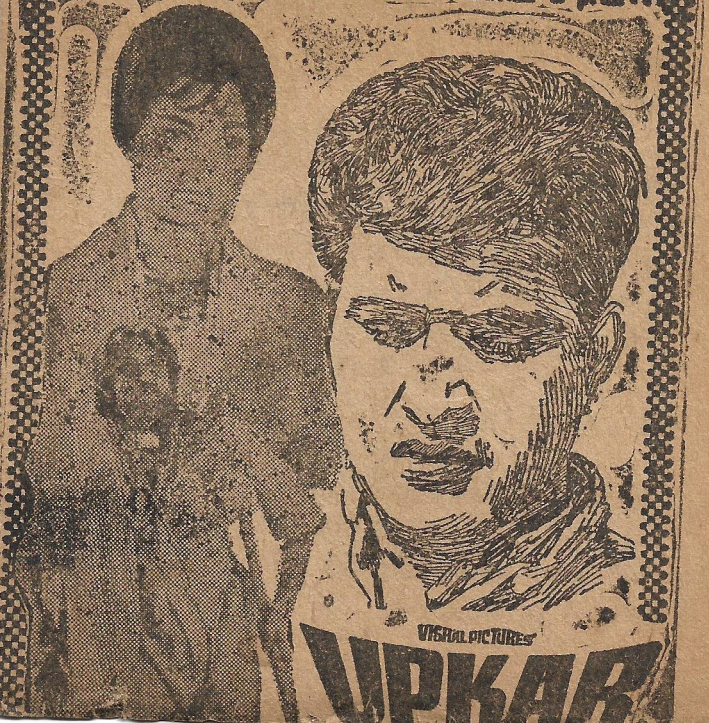

विशाल पिक्चर्स कृत

डायरेक्टर-मनोज कुमार म्यु.-कल्या-आनंदजी

कलाकार-आशा पारेख, मनोज कुमार, प्रेम चोपडा व.

० उपकार के गाने ०

महेंद्र और साथी-- १

मेरे देश कि धरती ओ मेरे देश कि धरती
सोना उगले २ हीरे मोती, मेरे देश...
बैलो के गले में जब घुंघरु
जीवन का राग सुनाते है
गम कोसो दुर हो जाता है
खुशियो के कमल मुस्काते है सुनके रहेट की आवाज
युं लगे कही शहनाई बज आते ही मस्त बहारो के
दुल्हन की तरह हर खेत सजे मेरे देश...
जब चलते है इस धरती पे हल
ममता अंगडाईयां लेती है
क्यो ना पुजे इस माटी को
जो जीवन का सुख देती है
इस धरती पे जिसने जनम लिया
उसने ही पाया प्यार तेरा
यहां अपना पराया कोई नही
है सबपे मां उपकार तेरा, मेरे देश की...

यह बाग है गौतम नानक का
खिलते है कमन के फुल यहां गांधी सुभाष
गांधी सुभाष टैगोर तिलक ऐसे है चमन के फुल यहां
रंग हरा हरी सिंह नवले से रंग लाल है लालबहादुर से
रंग बना बसंती भगत सिंह
रंग चमन का वीर जब जब से मेरे देश...
मेरे देश कि धरती सोना उगले २ हीरे मोती

२-आशा पीली २ सरसो फुली पीला उडे पतंग
ओ पीली उडो चुनरिया
ओ पीली पगडी के संग
गले लगा के दुश्मन को भी यार बनालो कहे मलंग
आई झुमके बसंत झुमो संग में
आज रंग लो दिलो को इक रंग मे
आई झुमके बसंत...
है ये धरती सभी कि गगन सब का
तेरा मेरा जो कहीं है यह चमन सब का
हो तेरा मेरा जो कहे वो है छोटे दिलका
अरे दिल से बडा जो है छोटे दिलका
ओ कोई छोटा न बडा ओ कोई खोटा न खरा
ओ जीना सीख लो
जरा इक ढंग मे आई झुम के बसंत

मेरी मिट्टी के लाखों मन दाने
दान तेरा भट्टी में भून गये जा के
दिल को रखना ओ बुढ़े बचाके
भून डालूंगी मैं दानों में मिला के
ओ प्यारी फिटे मुं छोड़ पीछा-अरे ओ हट्टी वाले
तभी छोड़ूंगा जब तूने हां कि
बुढ़ापे कि शर्म कर, फिटे मुं बच्चों वाले
अरे दो दो बच्ची वाले
ओ प्यारी इनको भी तो जरुरत है मां कि ना २ ब बू
क्या है बेटे ओ बापू झुठ न ऐसे बोल
हम तो हीरे है अनमोल हमको भट्टी में न रोल
अपने दिल के संग में आई झुमके बसंत
आज लागे नही धरती पे मेरे पांव रे
बात दिलकी चाहे जान ही ले सारा गांव रे
नरसे प्यार कि फुहार
है वह खुशी का मल्हार
आज यहां न रहेगा कोई भी अकेला
जाने तुझमें क्या है बात
तुम को याद करुं दिन रात
दिल वह चाहे थाम के हाथ
चल दुं तेरे संग में आई झुमके बसंत

३-मन्नाडे-कसमें वादे प्यार वफा
सब बातें बातों का क्या कोई किसी के नही है
यह झुठे नाते है नातो का क्या
होगा मसीहा सामने तेरे फिर भी न तू बच पायेगा
तेरा अपना खुन ही आखिर तुझको आग लग येगा
आसमां पे उडने वाले मिट्टी में मिल जायेगा
सुख मे तेरे साथ चलेंगे दुखमें सब मुख मोढ़ेंगे
दुनिया वाले तेरे बनकर तेरा ही दिल तोडेंगे
देते है भगवान को धोका इन्सां को क्या छोडेंगे
यह झुठे नाते है नातो का क्या कसमें वादे
यह बातें है बातों का क्या
४-मुकेश-दिवानो से ये मत पुछो
दिवानो पे क्या गुजरी है
हां उनके दिलों से यह पुछो
अरमानो पे क्या गुजरी है और को पिलाते रहते है
और खुद प्यास रह जाते है ये पीने वाले क्या जाने
पैमानो पे क्या गुजरी
मालिक ने बनाया इन्सां को
इन्सान मुहब्बत कर बैठा
वो उपर बैठा क्या जाने इन्सानोपे क्या गुजरी है
हां उनके दिलो से ये पुछो अरमानो पे

५-आशा-गुलाबी गुलाबी रात गुलाबी
गुलाबी रात की हर बात गुलाबी
तुमसे निगाहें मिली राज़े दिल पा पा गए
लो हम बुलाये बगैर बाहों में आ आ गए
तुम भी हो राजी हम भी है राजी
जीत ल बाजो-आ ा हा हा
गुलाबी रात की हर बात गुलाबी गुलाबी
जाने न दे हाथ से ऐसी हंसी रात की
पहलू में ठहराले तू
बहारों की बारात को दिल जलाके शम्मे बुझा दे
तुफां उठा दे.. आ हा हा हा
काली यह काली रात काली
है काली रात की हर बात काली
६-रफी-रोती तो कहां, अफसोस यहां
पानी कि भी लाचारी है
आंचल का अमृत सुख गया
ममता भी भूख से हारी है इनकी रगों में खून कहां
फल कहां है इनके पसीने का
यह प्यासी रुहें पुछती है
किसने छीना हक जीने का
कुछ लोग यहां पर ऐसे है औरों का जीवन जीते हैं

चुपके चुपके मदीरा की तरह
इन्सां का लहु जो पीते है
अक्सर तन ढकने कि खातिर
खुद तन ही बिकने लगता है
कोई पेट पालने निकला तो
कोई पेठ में पलने लगता है मंहगाई बढ़ाने वालो से
वह भूखे फरिश्ते पुछते है अनाज दबाने वालो से
वह भूख फरिश्ते पुछते है
यह हाल रहा तो दुनिया मे
भारत की कहानी क्या होगी
जिस देश का बचपन भूखा है
फिर उसकी जवानी क्या होगी
७-रफी-वह कैसी-यह कैसी रात कैसी-२
यह बढती जा रही है बात कैसी
यह कैसी रात कैसी यह कैसी रात कैसी
राखो सुलगी सिंदुर जले
सोया है कोई शोलो के तले
इस तरह जला कोई जिंदा
लो मौत हुई है शर्मिंदा धरती अर्थी बन जाती है
जब जब बारुद पिघलती है
लगती है किसी मां के दिल पर

सीमा पे ये गोली चलती है
इन्सां को कौन लडाता है
क्यो जंग अभी तक जारी है
लाशे जो खरीदा करता है युं कौन एसा व्यापारी है

लता—— ८

हर खुशी हो वहां तू जहां भी रहे
जिन्दगी हो वहां तू जहां भी रहे
यह अन्धेर मुझे इसलिए पसंद
इन मे साया भी अपना दिखाई न दे
रोशनी हो वहां तू जहां भी रहे
जिन्दगी हो वहां तू जहां भी रह
हर खुशी हो वहां तू जहां भी रहे
चांद धुंधला सही गम नही है मुझे
तेरी रातो पे रातो का साया न हो
चांदनी हो वहां तू जहां भी रहे
जिन्दगी हो जहां तू जहां भी रहे
हर खुशी हो वहां तू जहां भी रहे

प्रकाशक—एफ. बी. बुरहानपुरवाला, सेंट्रल प्रकाशन
सिप्लेक्स बिल्डिंग, पायवाला स्ट्रीट बंबई ४
मुद्रक—एस. के. सरगोनवाला
न कोर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफ्फराबाद हॉल ग्रांट रोड बंबई-७